Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 17, Issue No. 1, April-2020, ISSN 2230-7540

महाविद्यालयो में पुस्तकालय प्रणाली और सेवाओं की भूमिका

Ajeet Kumar Sahu[1]*, Dr. Pradeep Kumar Dubey[2]

[1] Research Scholar, Shri Krishna University, Chhatarpur M.P.

[2] Professor, Shri Krishna University, Chhatarpur M.P.

सार - *संस्थान-व्यापी शिक्षण, अनुसंधान और विस्तार गतिविधियों के लिए इन कार्यक्रमों के उपयोग को प्रोत्साहित करने में पुस्तकालयों की भूमिका हैं। डिजिटल संग्रह की स्थापना, ऑनलाइन संदर्भ सेवाएं, डिजिटल भंडार, ऑनलाइन कैटलॉग, और सूचना साक्षरता पहल कुछ पुस्तकालय प्रयास हैं, जो सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के युग में आगे की शिक्षा के लिए किए गए हैं। पुस्तक ज्ञान और सूचना सेवाओं की सटीकता प्राप्त करने के लिए, महाविद्यालय पुस्तकालय को समेकित किया जाना चाहिए और सूचना श्रेष्ठता के आधार पर पारंपरिक पेपर-आधारित जानकारी का कार्य, नेटवर्क जानकारी के विकास की आवश्यकताओं को जल्दी से अनुकूलित करना चाहिए। संदर्भ और सूचना सेवाएं एक व्यापक श्रेणी है, जिसमें पुस्तकालयाध्यक्षों द्वारा दी जाने वाली सहायता और सेवाएं शामिल हैं। ये सेवाएं उपयोगकर्ताओं को पुस्तकालय संसाधनों तक पहुंचने, पुस्तकालय सामग्री के उपयोग को प्रोत्साहित करने और उनकी सूचनात्मक जरूरतों को पूरा करने में मदद करती हैं।*

कीवर्ड - *महाविद्यालय, पुस्तकालय, प्रणाली, सेवा, भूमिका।*

----------X----------

परिचय

भारत में वर्तमान शिक्षा प्रणाली में मुख्य रूप से प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा, वरिष्ठ माध्यमिक शिक्षा और उच्च शिक्षा शामिल है। प्रारंभिक शिक्षा में आठ साल की शिक्षा शामिल है। माध्यमिक और वरिष्ठ माध्यमिक शिक्षा में से प्रत्येक में दो साल की शिक्षा होती है।[1] उच्च शिक्षा उच्च माध्यमिक शिक्षा या 12 वीं कक्षा उत्तीर्ण करने के बाद शुरू होती है। स्ट्रीम के आधार पर भारत में ग्रेजुएशन करने में तीन से पांच साल लग सकते हैं। स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम सामान्यतः दो से तीन वर्ष की अवधि का होता है। पोस्ट ग्रेजुएशन पूरा करने के बाद विभिन्न शिक्षण संस्थानों में शोध करने की गुंजाइश भी खुली रहती है।

भारत में तकनीकी शिक्षा समग्र शिक्षा प्रणाली में एक बड़ा योगदान देती है और हमारे देश के सामाजिक और आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा के लिए सरकार की योजनाओं के तीन केंद्रीय स्तंभ इन वास्तविकताओं को दर्शाते हैं: विस्तार, समानता और उत्कृष्टता। अगले पांच वर्षों में, उच्च शिक्षा के हर पहलू को मान्यता दी जा रही है और फिर से तैयार किया जा रहा है, वित्त पोषण, नेतृत्व और प्रबंधन, गुणवत्ता आश्वासन, जवाबदेही, उद्योग के साथ संबंध, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और शिक्षण और अनुसंधान के तरीके का संचालन किया जा रहा है।[2] मौजूदा संस्थान को मजबूत करने पर जोर दिया जाएगा। यकीनन राज्य विश्वविद्यालयों के शासन और वित्त पोषण में सबसे बड़ा सुधार, संघीय सरकार से राज्य सरकार को उच्च शिक्षा के लिए प्राधिकरण और बजट सौंपने के लिए एक महत्वाकांक्षी कार्यक्रम चल रहा है।

भारत में उच्च शिक्षा

आजादी के बाद शिक्षा की जिम्मेदारी सरकार ने ली। वे अपने देश और इसकी अनमोल विरासत के लिए महसूस करते हैं। राधा कृष्णन आयोग के सुझावों पर स्वतंत्रता के तुरंत बाद, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) की स्थापना दिसंबर 1953 में (नवंबर 1956 में एक

वैधानिक निकाय के रूप में) न केवल उच्च शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए बल्कि गुणवत्ता बनाए रखने और इसके सर्वांगीण विकास को नियंत्रित करने के लिए की गई थी। विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948-49), माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952-53) और शिक्षा आयोग (1964-66) की नियुक्ति भारत सरकार द्वारा उच्च शिक्षा पर भविष्य की कार्रवाई का सुझाव देने के लिए की गई थी।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति

शिक्षा पर राष्ट्रीय नीति (एनपीई) को मई 1986 में संसद द्वारा अपनाया गया था। एनपीई की समीक्षा करने और इसके संशोधनों के लिए सिफारिशें करने के लिए मई 1990 में आचार्य राममूर्ति की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया था। एनपीई की मुख्य कुंजी इस प्रकार हैं:[3]

- शिक्षा सभी के लिए आवश्यक है।
- विषमताओं को दूर करना और शैक्षिक अवसरों को समान बनाना।
- महिला सशक्तिकरण में भूमिका को बढ़ावा देना।
- अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति की शिक्षा को बढ़ावा देना और छात्रवृत्ति और छात्रावास की सुविधा प्रदान करना।
- अल्पसंख्यक समूहों के लिए शैक्षिक सुविधाएं प्रदान करना जो शैक्षिक रूप से वंचित हैं।
- शारीरिक रूप से विकलांग और वयस्क शिक्षा के लिए शैक्षिक सुविधाएं प्रदान करना।

गुणवत्ता की शिक्षा

प्रशिक्षित समर्थित शिक्षकों द्वारा प्रदान की जाने वाली अच्छी गुणवत्ता वाली शिक्षा, सभी बच्चों, युवाओं और वयस्कों का अधिकार है, कुछ का विशेषाधिकार नहीं। शिक्षा उनकी आवश्यकताओं के प्रति उत्तरदायी और उनके जीवन के लिए प्रासंगिक होनी चाहिए। शिक्षक सीखने में सुधार की कुंजी हैं। छात्रों के सीखने की गुणवत्ता पर उनका एक शक्तिशाली प्रभाव पड़ता है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा न केवल लोगों की बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए आवश्यक है, बल्कि वैश्विक शांति और सतत विकास के लिए परिस्थितियों को बढ़ावा देने में भी मौलिक है। सभी युवाओं को अपने समुदायों में फलने-फूलने और योगदान करने के लिए सक्रिय, सहयोगी और स्व-निर्देशित तरीकों से सीखने की जरूरत है। बुनियादी बातों के साथ-साथ, उन्हें दृष्टिकोण, मूल्य और कौशल के साथ-साथ जानकारी हासिल करने की आवश्यकता होती है। उनके शिक्षकों, साथियों, समुदायों, पाठ्यक्रम और सीखने के संसाधनों को उन्हें विश्व स्तर पर मानवाधिकारों को पहचानने और सम्मान करने और वैश्विक कल्याण को महत्व देने के साथ-साथ उन्हें **21** वीं सदी के रोजगार के अवसरों के लिए प्रासंगिक कौशल और दक्षताओं से लैस करने में मदद करनी चाहिए।[4]

पुस्तकालय प्रणाली

प्राचीन समय में पुस्तकालय को पुस्तकों का भंडार माना जाता था और वे केवल संरक्षण के लिए होते हैं। लाइब्रेरियन को एक संरक्षक माना जाता था और वह पुस्तकों के उपयोग को प्रोत्साहित नहीं करता था। धीरे-धीरे यूजर्स की जरूरत बदल गई है और वे अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो गए हैं। प्रिंटिंग प्रेस के आविष्कार के कारण पुस्तकों की छपाई बढ़ रही है और सभी उपयोगकर्ताओं के लिए उपलब्ध हो गई है। पुस्तकालय प्रणाली इस प्रकार हैं:

- बंद पहुंच प्रणाली
- ओपन एक्सेस सिस्टम

पुस्तकालय स्वचालन प्रणाली

पारंपरिक पुस्तकालय स्वचालित पुस्तकालय को रास्ता दे रहा है। यह माइक्रोफिल्म, माइक्रोग्राफ, फ्लॉपी और सीडी आदि में बदल गया। पुस्तकालय के स्वचालन में सभी दस्तावेज किसी भी सॉफ्टवेयर के माध्यम से फीड होते हैं। पुस्तकालय स्वचालन, पुस्तकालयों की विशिष्ट प्रक्रियाओं जैसे कैटलॉगिंग और संचलन को स्वचालित करने के लिए कंप्यूटर के उपयोग को संदर्भित करता है। स्वचालन आसान काम करने और मानव शक्ति और समय बचाने के लिए मशीनरी का उपयोग करने की एक प्रक्रिया है।

पुस्तकालय सेवाएं

पुस्तकालय को एक सेवा संस्थान के रूप में माना जाता है। इसका उद्देश्य उपयोगकर्ताओं को पुस्तकालय के संसाधनों और सेवाओं का सबसे प्रभावी उपयोग करने में सक्षम बनाना है। पुस्तकालय सामग्री प्राप्त करता है, इसे संसाधित करता है और इसे संरक्षण के बजाय उपयोग के लिए उपलब्ध कराता है।

www.ignited.in

आज पुस्तकालयों के सामने एक बड़ा फैसला आता है कि कोई आगे बढ़ता है तो कोई जस का तस।

पुस्तकालय हमेशा संस्था के एक महत्वपूर्ण अंग के रूप में सोचते हैं और ग्राहकों को अपने क्षेत्र में खुश और जागरूक रखने के लिए वे अपने डिजिटल संसाधनों का विस्तार कर रहे हैं। किताब नहीं जा रही है। हालाँकि, पारंपरिक सूचना प्रारूपों का उपयोग कई नए और विकसित प्रारूपों के संयोजन में किया जा रहा है। यह हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम अपने उपयोगकर्ताओं को बिना मांगे अपनी ज़रूरत की चीज़ें ढूँढ़ने में मदद करें। हमें उपयोगकर्ता की आवश्यकताओं को समझना चाहिए और उन्हें हल करने का प्रयास करना चाहिए।[5]

पुस्तकालय प्रणाली का विकास

प्राचीन काल में, भारत में शिक्षा की गुरुकुल प्रणाली थी जिसमें जो कोई भी अध्ययन करना चाहता था वह शिक्षक (गुरु) के घर जाता था और पढ़ाने का अनुरोध करता था। सिंधु घाटी सभ्यता का पुस्तकालय विकास और प्रगति से, दृष्टिकोण:

पूर्व वैदिक काल:

हड़प्पा (सिंधु घाटी) सभ्यता के निवासियों की अपनी लिपि चींटी भाषा थी। यह सभ्यता सबसे पुरानी सभ्यता है जिसे कांस्य युग की सभ्यता के नाम से भी जाना जाता है। वे अपने विचार व्यक्त करने के लिए और एक स्थान से दूसरे स्थान पर सूचना भेजने के लिए भोज पत्र, तड़ पत्र, लकड़ी के बोर्ड, पेड़ों की छाल का उपयोग करते हैं।

वैदिक काल:

शिक्षा की यह प्रणाली "पुस्तकों के माध्यम के बिना मौखिक रूप से" प्रदान की गई थी शिक्षा की इस प्रणाली में एक बच्चा पांच साल की उम्र में विद्यारंभ नामक समारोह के साथ शुरू होता था।[6] यह पहली बार अक्षर सीखने और देवी सरस्वती की पूजा करने के द्वारा चिह्नित किया गया था। बच्चा अपने माता-पिता का घर छोड़ देता है और अपनी पढ़ाई शुरू करने के लिए अपने शिक्षक के घर रहने चला जाता है। इस काल में आर्यों ने ब्राह्मण की मूल लिपि का आविष्कार किया था और प्रगति के चलते इसकी वर्णमाला तैयार की गई थी जो देवनागरी वर्णमाला का पूर्ण रूप था।

बौद्ध काल:

बौद्ध काल के दौरान अच्छी तरह से स्थापित नियमित शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना की गई थी। धीरे-धीरे बड़े-बड़े धार्मिक स्थल और आश्रम शिक्षण संस्थान के रूप में कार्य करने लगे। ये संस्थान प्राथमिक और उच्च शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। इस काल में संगठित शिक्षण संस्थानों और पुस्तकालयों की उत्पत्ति हुई। विभिन्न रैंकों और वर्गों से संबंधित और विभिन्न जनपदों या गणराज्यों से आने वाले छात्रों को नि: शुल्क शिक्षा प्राप्त हुई।

मुस्लिम काल:

ऐतिहासिक रूप से मुस्लिम काल को मध्ययुगीन काल और मुगल काल के रूप में भी जाना जाता है। **13** ईस्वी से **18** ईस्वी के दौरान भारत में मुस्लिम प्रभाव मुगल काल ने पुस्तकालयों के विकास को और प्रोत्साहन दिया। मुगल शासकों ने पुस्तकालयों को काफी महत्व दिया और विद्वानों को पुस्तकालयाध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया। मुस्लिम शासकों ने भारतीय संस्कृति में महान योगदान दिया और पुस्तकालयों ने राष्ट्र के सामाजिक सांस्कृतिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मुगल काल को इसकी शैक्षिक, साक्षरता और पुस्तकालय गतिविधियों के लिए भारतीय इतिहास का स्वर्ण काल माना जाता है।[7]

ब्रिटिश काल:

अठारहवीं सदी के आधे भाग में अंग्रेज आए। अंग्रेजों का मुख्य उद्देश्य भारत में व्यापार और वाणिज्य की स्थापना करना था। उन्होंने भारत में उत्पादित कपास और रेशम के अच्छे गुणों को खरीदना शुरू कर दिया और यूरोप को निर्यात किया। उनमें से कुछ भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के उत्थान के लिए बहुत रुचि रखते थे। ब्रिटिश काल के दौरान ईस्ट इंडिया कंपनी (**1600** में स्थापित) और ईसाई मिशनरियों द्वारा कई शैक्षणिक संस्थान स्थापित किए गए थे, उनमें से कुछ भारत में उच्च शिक्षा के विकास और विकास से संबंधित थे।[8]

स्वतंत्रता अवधि:

स्वतंत्रता के समय भारत अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा था। **1947** से पहले भारत में केवल **19** विश्वविद्यालय थे। भारत में विश्वविद्यालय पुस्तकालयों

के विकास के लिए। विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग की नियुक्ति **1948-49** में डॉ. एस. राधाकृष्णन की अध्यक्षता में हुई थी। आयोगों की सिफारिशें वार्षिक अनुदान, खुली पहुंच प्रणाली, काम के घंटे, पुस्तकालय के संगठन, कर्मचारी, छात्रों को पुस्तक के प्रति जागरूक करने के लिए कदम और शिक्षकों को किताबें खरीदने के लिए अनुदान देने की आवश्यकता है। आयोग ने अकादमिक पुस्तकालयों के अपने अध्ययन में पाया कि पुस्तकालयों की स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी, वे एक आधुनिक विश्वविद्यालय की पाठ्यचर्या संबंधी जरूरतों को पूरा करने के लिए निराशाजनक रूप से अपर्याप्त थे, वे खराब, खराब स्टॉक वाले और बीमार कर्मचारी थे और मानक साहित्यिक में पूरी तरह से काम कर रहे थे। और वैज्ञानिक पत्रिकाओं।[9] इन पुस्तकालयों के लिए वार्षिक अनुदान पर्याप्त नहीं था। इसलिए आयोग ने सिफारिश की कि प्रत्येक शैक्षणिक संस्थान के कुल बजट का कम से कम **6** प्रतिशत पुस्तकालय के लिए अलग रखा जाना चाहिए।

भारत में पुस्तकालय विज्ञान का इतिहास

शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार ने श्री के.पी. सिन्हा भविष्य की पुस्तकालय संरचना और भारत में इसके विकास की सिफारिश करेंगे। समिति ने 1958 में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की। 1959 में, केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय ने मुख्य रूप से सार्वजनिक पुस्तकालयाध्यक्षों को निर्देश देने और शिक्षण सहायक सामग्री और सामग्री तैयार करने के लिए दिल्ली विश्वविद्यालय में एक पुस्तकालय विज्ञान संस्थान स्थापित करने के लिए अनुदान प्रदान किया। 1985 में इंडियन लाइब्रेरी एसोसिएशन और राजा राममोहन राय लाइब्रेरी फाउंडेशन, दोनों ने पुस्तकालय और सूचना प्रणाली पर राष्ट्रीय नीति पर अलग-अलग प्रारूप तैयार किए।[10] इसने पुस्तकालय और सूचना विज्ञान में राष्ट्रीय शैक्षिक और अनुसंधान केंद्र की स्थापना का प्रस्ताव रखा। यूजीसी ने अपनी विभिन्न समितियों और विषय पैनलों के माध्यम से स्वतंत्रता भारत में पुस्तकालय और सूचना विज्ञान शिक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

महाविद्यालय में पुस्तकालयों की भूमिका

आज के पुस्तकालयों ने आधुनिक समाज में एक नई भूमिका ग्रहण की है, जिसके द्वारा वे शैक्षिक सूचना और संचार प्रौद्योगिकी और नए मीडिया को एकीकृत करते हैं। सूचना युग में अकादमिक पुस्तकालयों/पुस्तकालयाध्यक्षों की भूमिका उपयोगकर्ताओं की जरूरतों को पूरा करने के लिए उपयुक्त और सटीक जानकारी तक पहुंच को बढ़ावा देना है। इंटरनेट अद्भुत चीज है लेकिन यह पुस्तकालय परिसर का विकल्प नहीं है। पुस्तकालयाध्यक्ष छात्रों और अन्य उपयोगकर्ताओं का मार्गदर्शन करते हैं और सिखाते हैं कि सूचना के सर्वोत्तम स्रोतों को कैसे खोजा जाए, चाहे वह प्रिंट हो या ऑनलाइन। कुछ साल पहले पुस्तकालय पुस्तक केंद्रित संस्थान थे। वे सिर्फ प्रिंट कार्ड कैटलॉग थे। पुस्तकालयों को ज्ञान/सूचना के भंडार गृह के रूप में जाना जाता था, लेकिन आजकल पुस्तकालयों की अवधारणा को बदल दिया गया है। वे पुस्तकें और गैर-पुस्तक सामग्री एकत्र करते हैं और अपने ग्राहकों को प्रभावी पुस्तकालय सेवाएं प्रदान करते हैं। प्राथमिक, माध्यमिक और तृतीयक सभी प्रकार की सूचना के स्रोत महाविद्यालय के पुस्तकालयों में उपलब्ध हैं।[11]

कुछ महाविद्यालय पुस्तकालयों में ऑनलाइन खोज की सुविधा भी है और वे वेब 2.0 की सुविधा भी प्रदान करते हैं। वेब 2.0 (लाइब्रेरी 2.0) एक उपयोगकर्ता-केंद्रित आभासी समुदाय है। यह एक सामाजिक रूप से समृद्ध, अक्सर समानतावादी इलेक्ट्रॉनिक स्थान है। यह पुस्तकालय सेवाओं के आधुनिक रूप के लिए एक मॉडल है जो पुस्तकालय की दुनिया के भीतर उपयोगकर्ताओं को सेवाएं प्रदान करने के तरीके में एक संक्रमण को दर्शाता है।

पुस्तकालय और सूचना प्रणाली पर राष्ट्रीय नीति

संस्कृति विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार ने अक्टूबर 1985 में वरिष्ठ पुस्तकालय वैज्ञानिकों और अन्य विशेषज्ञों की एक समिति नियुक्त की, जिसमें प्रो. डीपी चट्टोपाध्याय अध्यक्ष के रूप में पुस्तकालय और सूचना प्रणाली पर राष्ट्रीय नीति पर एक मसौदा दस्तावेज तैयार करने के लिए। इसकी रिपोर्ट का शीर्षक पुस्तकालय और सूचना प्रणाली पर राष्ट्रीय नीति (नेप्लिस) है। समिति ने अपना कार्य पूरा किया और 31 मई 1986 को सरकार को एक मसौदा दस्तावेज प्रस्तुत किया।[12] पुस्तकालय और सूचना नीति के मुख्य उद्देश्यों की सिफारिश इस प्रकार की गई:

- राष्ट्रीय गतिविधि के सभी क्षेत्रों में संगठन, उपलब्धता और सूचना को तेजी से बढ़ावा देने और बनाए रखने के लिए।
- मौजूदा पुस्तकालय और सूचना प्रणाली और सेवाओं के आधुनिकीकरण और उन्नयन के

www.ignited.in

लिए कदम उठाना और हमारी राष्ट्रीय जरूरतों के लिए प्रासंगिक नए प्रोग्रामर शुरू करना।

- पुस्तकालय और सूचना कर्मियों के प्रशिक्षण के लिए हर संभव गति से प्रोग्रामर्स को प्रोत्साहित करना और शुरू करना।

- सभी क्षेत्रों की सूचना आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पुस्तकालय और सूचना सुविधाओं और सेवाओं के तेजी से विकास को सुनिश्चित करने के लिए एक पर्याप्त निगरानी तंत्र स्थापित करना।

निष्कर्ष

पुस्तकालय सेवा संस्थान है, पुस्तकालय की मूल अवधारणा उपयोगकर्ताओं की आवश्यकता के अनुसार प्रदान की जाने वाली सेवाओं से संबंधित है। पुस्तकालय अपने कार्यक्रमों की योजना पुस्तकालय विज्ञान के पांच नियमों के दिशा-निर्देशों पर आधारित है। पुस्तकालयों को सूक्ष्म दस्तावेज़ों से मैक्रो दस्तावेज़ों में स्थानांतरित कर दिया गया है। पुस्तकालयों का कार्य न केवल पुस्तकें और गैर-पुस्तक सामग्री एकत्र करना और प्रभावी पुस्तकालय सेवाएं प्रदान करना है, बल्कि अपने ग्राहकों के लिए विभिन्न प्रकार की सूचना सेवाओं के माध्यम से संग्रह और प्रसार को अधिक व्यापक रूप से और तेजी से करना है। उपयोगकर्ताओं के बदलते स्वरूप की जरूरत है, वर्तमान परिवेश में पुस्तकालय भी बदल रहे हैं। ये यूजर्स की जरूरत के हिसाब से अपडेट होते जा रहे हैं। आजकल पुस्तकालयों की अवधारणा को बदल दिया गया है। वे बहुत उन्नत हो गए हैं। सूचना प्रौद्योगिकी के विकास ने सूचना एकत्र करने, संग्रहीत करने, पुनः प्राप्त करने और प्रसारित करने के तरीके में भारी परिवर्तन किया है। पुस्तकालय खुद को पारंपरिक पुस्तकालय से डिजिटल या आभासी पुस्तकालयों में ले जा रहे हैं।

संदर्भ

1. कुई शियाओक्सी और वेन मिंगमिंग। बड़े डेटा के संदर्भ में विश्वविद्यालय के पुस्तकालयों के लिए निजीकृत सूचना सेवा काउंटरमेशर्स। चीन नई दूरसंचार, 2020 अंक 15।
2. यिन हुआनहुआन, ली यापिंग, झांग लुलु, और गु येकिंग। पुस्तकालय प्रबंधन और सेवा के लिए 12 वें रचनात्मक मंच का अवलोकन। जर्नल ऑफ एकेडमिक लाइब्रेरीज़, फरवरी 2020, अंक 2, पीपी.23।
3. पैंग यांग। डिजिटल कैंपस की निर्माण योजना और तकनीकी अनुसंधान। तियांगोंग विश्वविद्यालय: 2017।
4. वांग डैनी। अनहुई कृषि विश्वविद्यालय में लाइब्रेरियन की गुणवत्ता का एक सर्वेक्षण और अध्ययन। अनहुई विश्वविद्यालय: 2017।
5. दहन, एस.एम.; ताइब, एम.वाई.; ज़ैनुद्दीन, एन.एम.; इस्माइल, एफ। सर्वेक्षण उपयोगकर्ताओं की अकादमिक पुस्तकालय सेवाओं की गुणवत्ता की धारणा: यूनिवर्सिटी मलेशिया पहांग (यूएमपी) पुस्तकालय में एक केस स्टडी। जे. अकाद। पुस्तकालय 2016, 42, 38-43।
6. गौड, एच.जी. कर्नाटक राज्य के आरवाईएम इंजीनियरिंग कॉलेज लाइब्रेरी बेल्लारी में सेवा गुणवत्ता मापने: एक लिबक्वाल + टीएम दृष्टिकोण। एशियाई जे. इंफ. विज्ञान तकनीक। 2013, 3, 1-7.
7. असगर, एम.बी.; शफीक, एफ। बहावलपुर के विशेष पुस्तकालयों में सेवा मूल्यांकन: जीसीटी, क्यूएमसी, और यूसीईटी का एक तुलनात्मक अध्ययन। पुस्तकालय फिलोस अभ्यास करें। 2012, 822, 1-13।
8. अर्जुन, के. (2012)। पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला के विभागीय पुस्तकालयों का उपयोग: एक अध्ययन, लैप लैम्पर्ट, अकादमिक प्रकाशन।
9. साहा, नेकां (2011)। बर्दवान विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल, भारत के पेशेवर संकायों के विशेष संदर्भ में 21वीं सदी में विश्वविद्यालय पुस्तकालय सेवाओं और इसके उपयोगकर्ताओं का अध्ययन। पुस्तकालय और सूचना विज्ञान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 3(7), पी.130 - 137।
10. रहमान, एस.यू.; शफीक, एफ.; महमूद, के। पंजाब के विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में संदर्भ सेवाओं के साथ उपयोगकर्ता धारणा और संतुष्टि का एक सर्वेक्षण। पुस्तकालय फिलोस अभ्यास करें। 2011, 624, 1-15।
11. अरशद, ए.; अमीन, के। पंजाब के पुस्तकालयों के विश्वविद्यालय की सेवा की गुणवत्ता: उपयोगकर्ताओं की धारणाओं का अन्वेषण। अभिनय करना। उपाय। मीटर 2010, 11, 313-325।

12. देंग बिन। सिंगापुर पुस्तकालय के विकास के आधार पर पुस्तकालयाध्यक्षों की भूमिका परिवर्तन पर देखें [जे]। जर्नल ऑफ़ नानजिंग वोकेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ़ इंडस्ट्री टेक्नोलॉजी, 2008, 8 (4): 81-85।

Corresponding Author

Ajeet Kumar Sahu*

Research Scholar, Shri Krishna University, Chhatarpur M.P.